अयोध्या प्रकरण एंव उत्तर–प्रदेश के साम्प्रदायिक दंगे

शालु
राजनैतिक विज्ञान विभाग
जीवन चानन महिला महाविधालय असन्ध (करनाल) भारत

भारत एक धर्म निरपेक्ष राश्ट्र है : फिर भी इसका इतिहास सदैव साम्प्रदायिकत्य की समस्या से घिरा रहा है। जिसने भारत की एकता के मार्ग को सदैव अवरुद्व किया है जिसने एक धर्म के लागो को दूसरे धर्म के लोगो से घृणा कर सिखाया है तथा हमारे राश्ट्र की उन्नति के मार्ग को खोखला किया है देष की अन्य समस्याओ में साम्प्रदायिकता की समस्या का सबसे प्रलयकारी रुप है इसी समस्या ने दंगो की प्रवश्भूमि को तैयार किया है सन् 1947–1997 तक देष में 25000 साम्प्रदायिक दंगे हो चुके है वर्तमान समय में दन दंगो का कोई एक कारण नही माना जा सकता। आज हमारे समाज में अनेक ऐसे तत्व मौजूद है जो दंगो को आधार प्रदान करते है परन्तु ना केवल आज ब्लकि प्रारम्भ से ही दंगो का जो प्रमुख कारण रहा है वह धार्मिक है जिसका स्पश्ट प्रभाव हमें 1989 के वर्श से लेकर आज तक के साम्प्रदायिक दंगो में दिखाई पडता है।

षोध आलेख सार :– समाज का एक हिस्सा किसी ना किसी कि विचारधारा से जुडा रहता है। चाहे साम्प्रदायिक दंगे समाज के लिए कलक है। उससे यह पता चलता है। कि वह कितना रूग्न और अभिषप्त है। दंगे क्या है। कभी वह छोटे होते है। और कभी कभी बहुत बडे क्षेत्र को अपने प्रभाव को चपेट में ले लेते है। कभी दंगे कुछ दिन के बुलबुलो की तरह खत्म हो जाते है। ना केवल स्वतन्त्रता से पहले बल्कि स्वतन्त्र भारत में भी साम्प्रदायिक षक्तियो का विकास निरन्तर होता रहा है। दोनो सम्प्रदायो मे यह भावना व्याप्त थी। कि हिन्दु धर्म इस्लाम को समाप्त कर जिन्दा रह सकता है। और इस्लाम धर्म हिन्दुओ को समाप्त कर परिणामस्वरूप असरण्य दंगे हुए लेकिन कोई विषेश कार्यवाही नही देखी गई। क्योकि सरकार की नजर मे यह साम्प्रदायिक दंगे गल्तफहमी व नासमझी का कारण समझे गए। परन्तु वाले हर दंगे का

एक जैसा और प्रत्याषित सा परिणाम होता है। जिनमे उतर प्रदेष मे यह कहानी बार बार दोहराई गई है।

मुख्य षब्द :—

6 दिसम्बर 1992 भारत और विष्व के इतिहास मे एक काले दिन के रूप मे लिखा और पढा जाएगा। 6 दिसम्बर को केवल डॉचा ही नही गिरा डॉचे के साथ ही भारत की पथनिरपेक्षता भी धवस्त हो गई अपनी सहिगुणता के लिए विष्वासत भारत की सहधर्मिता सहआस्तित्व और सदभावना का पौर पौर टुटा ही नही। उसे बहुत गहरे गाढ दिया गया। 6 दिसम्बर ने भारत को इतने गंभीर रूप से घायल कर दिया की। इस घाव को भरने और इस हादसे को भूल जाने में कई दषक लग जाएगे।[1]

परिचयः—

सम्प्रदाय का अर्थ होता है। कर्म काण्ड जान काण्ड उपासना काण्ड तथा षिल्प विघा की अनादि अविछिून आचार्य परम्परा परन्तु आजकल सम्प्रदाय और सम्प्रदायकिता षब्द दुसरे आभाव मे ही प्रस्तुत होते है। इन्हे दुशित मान लिया गया है। भारत मे साम्प्रदायिकता का जन्म बिट्रिष काल मे हुआ।

महात्मा गॉधी :— श्भारत मे साम्प्रदायकिता की समस्या के गंभीर होने कारणो को मुख्य रूप से दो सम्प्रदायो अर्थात हिन्दुओ और मुसलमानो के बीच खाई व एक दुसरे पर विष्वास न करने की नीति को माना। उन्होने माना की यह समस्या इसलिए है क्योकि दोनो सम्प्रदाय एक दुसरे के धर्म को एक दुसरे से अच्छा मानते हैश

सम्प्रदायिकता एक राजनितिक दर्षन है। इस विचार को प्रस्तुत करते हुए असगर अली इंजीनियर कहा है।

मुस्लिम साम्प्रदयिकता को जागृत करने मे सर सैय्यद अहमद खां की महत्वपुर्ण भूमिका रही है। उन्होने मुस्लमानों को सलाह दी कि वे

काग्रेस मे षामिल ना हो 1906 मे मुसलमानो द्रवारा इडिंयन मुस्लिम लीग नामक एक अलग राजनीतिक संगठन बनाया गया। 19 मार्च ₍1919 को खिलाफत कमेटी का गठन किया गया। परिणामस्वरूप 1922 मे अनेक साम्प्रदायिक झगडे हुए। तब से लेकर आज तक इस साम्प्रादायिक झगडे या दंगो पर विराम नही लग पाया ।

उतर प्रदेष भारत का बहुल मुस्लिम राज्य है। तथा भारत मे यह राज्य अत्यधिक दंगो का षिकार रहा है। तथा यदि हम अयोध्या प्रकरण को बात करे तो यह राज्य सबसे अधिक प्रभावित हुआ है।

इतिहास की दृश्टि से :– सन 1528 ई0 मे भारत को लूटने आये एक विदेषी मुगल षासक बबर ने अयोध्या के इस प्राचीन मंदिर को तोड कर मस्जिद की नीव डाली थी। गुलामी के दौर मे भी राम भगत उस पर अपना दावा प्रस्तुत करते रहे। और आजादी के बाद आज भी अपने अधिकार के लिए जुझ रहे है।

अयोध्या विवाद की वास्तविक लडाई 1885 ई0 मे षुरू हुई थी। जब फेजावाद मे इसके लिए पहला मुकदमा तैयार किया गया था। इस सम्बन्ध मे सन 1855 के वर्शो के बीच घटित हुई घटनाओ पर दृश्टि पात करना दिलचस्प होगा। अमेठी के सुफी संत बदंगी मियॉ के षिश्य मौलवी आमीर अली ने अयोध्या से यह खबर मिलने के बाद कि बाबरी मस्जिद नश्ट कर दी है। ओर उस स्थान पर कबजा कर लिया है।[2]

मौलवी अमीर अली लखनउ से अमेठी आ गया ओर उसने जिहाद के नाम पर एक बडी फौज एकत्रित कर ली और अपने सषस्त्र साथ्यिो को लेकर बढना जारी रखा। सन् 1816 बहु बेगम और बिट्रिष रेजिन्ट के बीच हुई सन्धि के मुताबिक अयोध्या मे षन्ति व्यवस्था स्थापित करने का उतरदायित्व ईस्ट ईन्डिया कम्पनी पर था। लेकिन बिट्रिष रेजीन्ट ने कोई भी कदम उठाने से इन्कार कर दिया। यह इन्कार किसी सैनिक असमप्रता से नही उपजा था। बल्कि इसके पीछे सोची समझी रणनीति काम कर रही थी अग्रेजो की यह निति

थी फुट डालो और षासन करो उन्होने इस विवाद को ना केवल जिन्दा रखा बल्कि उसे भडकाने की कोषिष की।[3]

मस्जिद गिराने के लिए सबसे पहले आन्दोलन सन 1984 ई0 मे विष्व हिन्दु परिशद दवारा आरम्भ किया गया था। सितम्बर 1989 ई0 मे विष्व हिन्दु के परिशद के सदस्य आर एस एस, षिव सेना , बजरंग दल इत्यादि द्वारा अयोध्या मे राम मंदिर निर्माण करने के लिए ईटों को पवित्र करना आरम्भ कर दिया और 9 नवम्बर को मंदिर बनाने के लिए जुलूसों द्वारा इन ईटो को अयोध्या ले जाया गया।[4]

इस प्रकार उतर प्रदेष साम्प्रदायिक तनाव उमाद तथा हत्याओ की प्रषट भुमि मे वोट बैक जुटाने के आलवा राम जन्म भमि बाबरी मस्जिद तथा षिलापूजन रहा ।[5]

परिचय 1990–1991 :– की ग्रह मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार इस काल में अधिकतर दंगे राम जन्म भूमि–बावरी मस्जिद विवाद को लेकर हुए।[6]

30 अक्तूबर 1990 ई0 में अयोध्या में राम मन्दिर निर्माण के लिए कार सेवा की योजना प्रस्तुत की गई जिससे देष के विभिन्न भागों में अनेक साम्प्रदायिक दंगें हुए। 6 दिसम्बर 1992 को दो लाख कार सेवको के द्वारा बाबरी मस्जिद को गिरा दिया गया। 6 से 14 दिसम्बर तक पूरे संसार ने टी0वी0 द्वारा देखा होगा। हत्याये वह भी बेगुनाह लोगो की,[7] 6 दिसम्बर को सुबह 11:30 बजे तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष मुरली मनोहर जोषी और लाल कृश्ण अडवाणी षिलायन्यास स्थल पर पहुंचे और 11:50 बजे कार सेवक विवादित ढांचें में घुस गए। दोपहर 12 बजकर 15 मिनट पर फैजाबाद में चौकसी कर दी गई व जिला प्रषासन ने राज्य सरकार से सुरक्षा बलो की मांग की परन्तु राज्य सरकार ने इंकार कर दिया दोपहर 12:20 बजे पूरे उत्तर–प्रदेष में रेड अलर्ट घोशित कर दिया गया षाम 2:45 बजे कार सेवकों ने एक गुबंढ ढहा दिया। 4:30 बजे दूसरा गुबंदा ढहा दिया। 4:45 बजे तीसरा गुबंद गिरा और मस्जिद को इमारत के तमाम अवषेश मिटा दिए गए फिर अगले दिन अयोध्या के गर्भग्रह में रामलला की

मूर्तीयो की स्थापना की गइ तथा इसके चारो तरफ चार दीवारी बना दी गई। यह घटना पूरे देष में आग की तरह फैल गई तथा देष के विभिन्न भागों में साम्प्रदायिक दंगे हुए।

मुम्बई के लोग सबसे ज्यादा हिंसा का षिकार हुए 7 दिसम्बर 1992 से जनवरी 1993 तक सारी मुम्बई में एक महीने तक आग लगी रही कम से कम 1,789 लोग जान से हाथ धो बैठे और करोडो की संपति नश्ट कर दी गई। [8]

12 मार्च 1993 तक सारी मुम्बई को दहला देने वाले 13 धमाको के बाद मुंबई, ठाणे, रामगढ जिलों में इस बाबत 40 मामले दर्ज किए गए थे। [9] इन अमानवीश दंगो के अतिरिक्त 1992–93 के दंगो के ऐसे उदाहरण मिले जब चालो या झुग्गी–झोपडियो को उनमें रहने वालो के साथ ही जला दिया गया। [10]

कुल मिलाकर देषव्यापी दंगों में 10 हजार से ज्यादा लोगो की जाने गई। टाटा सेवाओं द्वारा दंगों के दौरान हुए नुकषान का कुल अनुमान 9 हजार करोड रुपयें लगाया गया। [11]

उत्तर–प्रदेष में तो षुरु से ही साम्प्रदायिक हिंसा एंव वैमनस्य विद्यमान रहा है जिसके प्रमुख केन्द्र मुरादाबाद, मैरठ, सहारनपुर, पीलीभीव, अलीगढ इत्यादि में दंगो की कहानी बार–बार दौहराई गई। [12]

1989 में जितने साम्प्रादायिक दंगे हुए उनसे सम्पूर्ण उत्तर–प्रदेष लहु–लुहान हो गया क्योकि यह चुनाव का वर्श था तो इन दंगो के सबसे महत्वपूर्ण राजनितिक कारण रहे है। 1989 में साम्प्रदायिक दंगो के जदन्य उदाहरण हमें भागलपुर में भी देखने को मिलते है। 23 अक्तुबर 1989 को चंदेरी गांव में हुए नरसंहार ने दिल दहला दिया इस दौरान भागलपुर में हुए दंगो में लगभग 1 हजार लागो को मौत की नींद सुला दिया करीब 50 हजार बैघर हो गयें और 11,500 मकान जला दिये गए [13] चंदेरी गांव में 100 आदमीयो, औरतो और बच्चो ने एक घर में षरण ले रखी थी तथा उनकी सुरक्षा के लिये मेजर विर्क को नियुक्त किया गया था। परन्तु उसने अपनी अनुपस्थिति में स्थानीय पुलिस को उनकी सुरक्षा के लिये नियुक्त किया गया।

[14] अगली सुबह उसे मकान खाली मिला और चार दिन बाद पास के तलाब में 61 क्षत विक्षत लाषें और अधमरें लोग मिले।

इसी प्रकार 27 अक्तुबर 1989 को यागलपुर के ही लोगांप गांव में 116 मुस्लमान मारे गये इन सभी की हत्या नृषंस तरीके से लोगांप गांव और आसपास के गांव से आये हिन्दुओं ने की तथा इन्हे अलग–अलग गढों में गाढ दिया गया इस घटना को वास्तविकता तब तक सामने नही आई जब तक अजीतदत नामक एक पुलिस उप महानिरक्षक ने गोभी बोए खेत में से 8 दिसम्बर 1989 को लाषें निकलवाने का काम षुरु नही कर दिया।

अगर हम उत्तर–प्रदेष के मैरठ जिलें के इतिहास पर नजर डालें या यूं कहें की प्रारम्भ से ही उत्तर–प्रदेष दंगे की आग में झुलसता रहा है 28 मार्च 1978 को मरादाबाद जिले उत्तर–प्रदेष से 37 किलोमीटर दुर समबल में दंगा बडका जिसमें 17 लोग मारें गये और 21 लोग घायल हुए दंगे का कारण देखिए समबल के बाजार में महमुद सराप के आगे जामामसजिद है हिन्दु कटटरपंथियों के अनुसार यह पहले षिव मंदिर था औरंगजैब ने इसे तुडवा दिया कई वर्शो से यह सुना जा रहा था की मसजिद में जल चढाते की आवाज आती है फिर यह अफवाह जोर पकडी की अब हिन्दु जल चढाएंगे फिर मुस्लमान आक्रमक हो गये। [15]

अलीगढ 5 अक्तुबर 1978 सुरेष चन्द्र षर्मा अर्थात् भुरा बाढ पीडितों की सहायतार्थ संगीत समारोह का आन्नद ले रहा था उसके तीन परिचितों अनवर, आजाद और हबीब ने उसे पान खाने के लिए बुलाया और वहा उसे चाकू से गोद दिया 5 अक्तुबर को ही सुरेष चन्द्र षर्मा ने ही अपने ब्यान में उन तीनो के नाम बताये थे। अब इस पर सामप्रदायिक रंग चढना आरम्भ हो गया लगभग 400 की भीड में रसूलगंज स्थित अस्पताल में सुरेष चन्द्र षर्मा की लाष हथियाली और सीधे कनवरगंज में ले जा कर बीच बाजार में ले जाया गया मानिक चौंक के बीच एक संकरी गली है। जिसमें 22–23 अलपसंख्यक परिवार थे इस गली को बन्द कर वहां आग लगा दी गई। [17]

मेरठ व अलीगढ आए दिन ऐसी घटनाएं होती रही परन्तु सरकार का रुख देखिए लोकसभा में केन्द्र में नेता चन्द्रषेखर और कुछ अन्य मंत्रियो ने प्रधानमंत्री मीराट जी देषाई से यह जाना चाहा की क्या अलीगढ के सन् 1978 में दंगो में राश्ट्रीय स्वयं सेवक संग का हाथ था प्रधानमन्त्री का उत्तर था की इस षिलषले में न्यायिक जांच का आदेष दे दिया गया है। उसकी रिर्पोट आने पर ही किसी पर दोश लगाना उचित होगा।

मेरइ षहर में 1987 का दंगा देखिए जिसमे पी0ए0सी0 की करतुत उजागर हई। 22 मई 1987 को सेना पी0ए0सी0 को पुलिस ने हाषिमपुरा मोहल्ले की तलाषिया ली तथा मुसलिम नौजवानो को एक ट्रक में डाल कर हाषिमपुरा से सीधा गाजियाबाद ले जाया गया। इसके बाद मलियान गांव के समीप 40 लाषें बहती पाई गई साम्प्रदायिक उन्माद भडका और मेरठ जलने लगा कुछ ही घण्टो के भीतर षहर की 350 से ज्यादा दुकाने और पैट्रोल बम्ब जला दिये गये दो माह में 350 लोग मारे गये। 13 हजार फौजियो को मैरठ की सडको पर षांति लाने में हफतो लगे।

सन् 1990 में दषक में ऐसी घटनाओं की मनोकतार सी लग गई कटटरपंथ फिर हावी हुआ तथा दंगों की रोकथाम की दिषा में कोई भी सरकार कामयाब नही रही इसी प्रकार 21वें दषक तक आते आते दंगों की सरकार कामयाब नही रही उपलिखित विवरण से षपश्ट है कि यकीन ना करने वाली छोटी से छोटी घटना भी बडे से बडे दंगों का रुप धारण कर जाती है बाबरी मस्जिद के षवंस का कथित बदला लेने के लिए आंतकवादियों ने मुंबई में 12 मार्च 1993 को सिलसिलेवार विस्फोटो द्वारा दंगो को अंजाम दिया 317 लोग काल का ग्रांस बने।[18]

13 दिसम्बर 2001 को संसद भवन पर आंतकवादियो की एकता। मुम्बई में सिलसिला आज भी जारी है। इस विस्फोटो की प्रकृति से अंदाजा लगता है कि मुम्बई को अस्थिर बनाने में प्रभावषाली षक्तिया काम कर रही है जिसमें जैसे :– जेष–ए–मोहम्मद, लष्कर–ए–ताएबा, हरकत–उल–मुजाहिदीन और हरकत–उल अंसार जैसे कई समूहों पर नजर है।

निश्कर्शः—

अंत में यह कहां जा सकता है कि स्वतन्त्र भारत में आज भी हमारा समाज दंगो से मुक्त नही है यू तो दंगों को अंग्रेजों द्वारा दी गई विरासत माना जाता है। परन्तु वास्तविकता यह नही है। क्योकि स्वतन्त्रता से पूर्व या स्वतन्त्रता के समय भी ऐसे दंगे नही हुए जितने ज्यादा उदाहरण हमें बाद के दंगों में देखने को मिलते है यहा तक कि 1989 से पूर्व साम्प्रादायिकता इतनी प्रभावी नही थी। सन् 1989 के वर्श में साम्प्रदायिकता के विकास में एक नया मोड आया उत्तर—प्रदेष में दंगो का मुख्य कारण राम जन्म भूमि बाबरी मस्जिद, वोट बैंक तथा षिलापूजन रहा रहा इन दंगो में मुसलमानो के साथ अत्यधिक अत्याचार हुए। यह दंगे वास्तव में हमारे देष के लिए बहुत बडी चुनौती है इन दंगो से ना केवल हमारा साम्प्रदायिक ढाचा अस्त—व्यस्त होता है ब्लकि यह हमारी राश्ट्रीय एकता के लिए बहुत बडा खतरा है इन दंगो ने आज हमारी लोकतान्त्रिक व्यवस्था को अस्त—व्यस्त बना दिया है बल्कि यह हमारी राश्ट्रीय एकता के लिये बहु बडा खतरा है इन दंगों ने हमारी लोकतान्त्रिक व्यवस्था को अस्थिर बना दिया है इन दंगों से निपटने के लिये सरकार को कठोर से कठोर कदम उठाने चाहिए तथा दिन प्रति दिन उग्र रुप धारण करके इन दंगो पर रोक लगाई जानी चाहिए।

1. भानुप्रताप षुक्ल, *अयोध्या,* विक्रम प्रकाषन, दिल्ली, 1998 प्र. 133
2. विभूति नारायण राय, *साम्प्रदायिक दंगें और भारतीय पुलिस,* राधाकृश्ण प्रकाषन, दिल्ली, 1998, प्र. 19

3. अखिलेष्वर पाण्डेय, *स्वतन्त्र भारत में हिन्दु मुस्लिम समस्या के आयाम,* राज पब्लिषिंग हाऊस दिल्ली, 1998, प्र. 12

4. आर पाल व्रास, *रायटस प्रागरमस,* मैकमिलन, लंदन, 1996 प्र0 169.

5. वाणी दास गुप्त, राश्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए इस वक्त सामप्रदायिकता ही असली खतरा, *मक्ति संघर्श,* नई दिल्ली, 9 सितम्बर 1990, प्र. 3

6. एन. एल. गुप्ता, *कम्पुनल रायटस,* ज्ञान पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली 2000 पृ. 99

7. नरेन्द्र षर्मा, *अयोध्या का राम मंदिर,* रोषनी पांकट बुक्स, दिल्ली, 1992 प्र0 10

8. सांयलन चक्रवर्ती, षीला रावल और फरजद अहमद, गिरफत से दूर है हत्यारे, *इण्डिया टुडे* नई दिल्ली, 23 जुलाई 2003 प्र0 28

9. षीला रावल, बाकी है अभी कई पंच और भी, *इण्डिया टुडे,* 25 अगस्त 2003 पृ0 10

10. असगर अली इंजीनियर, *बॉम्बे रोम्स इंडियाः फेज–1,* इंस्टिटयूट ऑफ इस्लामिक स्टडीन, मुम्बई, अप्रैल 1993, प्र0 86

11. राजीव बागची एंव निर्मल मित्रा, ब्लैक संडे, *संडे,* नई दिल्ली, बोल्यूम 19, अंक 49, 13–19 दिसम्बर 1992, प्र0 29

12. मुद्रा राक्षस, "धन प्रार्णीथ के खेल", *राश्ट्रीय सहारा* नई दिल्ली, 28 अप्रैल 2002 प्र0 8

13. सापतन चक्रवर्ती, षीला रावल और फरजद अहमद, गिरफत से दूर है हमें इण्डिया टुडे, नई दिल्ली, 25 जुलाई 2003 प्र0 27

14. असगर अली इंजीनियर, *कम्यूनिलिय इन इण्डिया,* विकास पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली, 1995 प्र0 132

15. असगर वजाहत, "समेंत में स्थिति सामान्य है" दिनमाय 23–24 अप्रैल 1978 प्र0 24–26

16. एस0 के0 घोश, *कम्यूनल रायटस,* आषीश पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली, 1987, प्र0 214

17. संसद, "काला कानून और दंगों की कालिख", *दिनमाव* 26 नवम्बर से 2 दिसम्बर 1978, प्र0 16

18. षेखर गुप्ता, "अल्पसंख्यकों का असुरक्षा बोध", *दैनिक जागरण,* नई दिल्ली, 8 सितम्बर 2003